

Dr.Raman Kumar Thakur

Asstt. prof.(Guest)

Department of Economics,
D. B. College, Jaynagar, Madhubani.

Class B.A.part 2

Date :-14-07-20

Topic:- **भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना एवं मूल विशेषताएं**
(Structure And Basic Features of Indian Economy):-

→ अर्थशास्त्र को सही रूप में समझने के लिए इसको तीन क्षेत्रों में बांट कर इसका वर्गीकरण किया गया है जिसे इस प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है:-

1) प्राथमिक क्षेत्र(Primary sector):- प्राथमिक क्षेत्र के अंतर्गत कृषि एवं इसकी सहायक क्रिया वह को सम्मिलित किया जाता है, जैसे-पशुपालन, वानिकी, मतस्य, खनन इत्यादि. यह चित्र मनुष्य का प्राचीनतम व्यवसाय है इस क्षेत्र के द्वारा उत्पादित वस्तुएं हमारे जीवन यापन के लिए अनिवार्य होती है। प्राथमिक क्षेत्र फसलों मांस ,मतस्य, वनोत्पाद, खनन आदि जैसे प्राकृतिक उत्पादों का उत्पादन करता है. प्राथमिक क्षेत्र को कृषि क्षेत्र भी कहा जाता है इस क्षेत्र के उत्पादकों के मुख्य घटक कृषि कार्यों में संलग्न है. साथ ही साथ प्राथमिक क्षेत्र उद्योग के लिए कच्चे माल की व्यवस्था करता है.

2).द्वितीयक क्षेत्र(Secondary sector):- द्वितीयक क्षेत्र को औद्योगिक क्षेत्र भी कहते हैं इस क्षेत्र में विनिर्माण, विद्युत, गैस, तथा जलापूर्ति महत्वपूर्ण है. द्वितीय क्षेत्र के विकसित रहने से प्राथमिक क्षेत्र का भी विकास होता है।

3). तृतीयक क्षेत्र(Tertiary sector):- तृतीय क्षेत्र को सेवा क्षेत्र भी कहते हैं इस क्षेत्र में वस्तुओं का नहीं बरन सेवाओं का उत्पादन किया जाता है . तृतीयक उद्योग व्यवसाय में परिवहन, संचार, भंडारण, व्यापार, बैंकिंग, बीमा, सार्वजनिक प्रशासन तथा अन्य सेवाओं को सम्मिलित किया जाता है. इस क्षेत्र को विकसित होने से प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रों की उत्पादन कुशलता भी बढ़ जाती हैं. किसी भी देश का व्यवसायिक ढांचा उसके आर्थिक विकास को

प्रकट करता है प्रायः अर्ध विकसित देशों में कार्यशील जनसंख्या का एक बड़ा भाग प्राथमिक क्षेत्र में संलग्न रहता है. इसके विपरीत विकसित देशों की जनसंख्या का छोटा भाग ही इस क्षेत्र में लगा होता है. जैसे -जैसे किसी देश का आर्थिक विकास होता है वैसे वैसे प्राथमिक क्षेत्र पर जनसंख्या का दबाव घटता जाता है.

* अर्थव्यवस्था की संरचना :- एक अर्थव्यवस्था की मुख्य कार्य मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन करना होता है. कृषि एवं उद्योग इन सभी प्रकार की भौतिक वस्तुओं का उत्पादन करते हैं. यह दोनों ही क्षेत्र प्रत्यक्ष उत्पादक क्रियाओं का (Directly produce) करते हैं तथा Directly productivity Activities D.P.A.), में भाग लेते हैं परंतु इनके संचालन के लिए कुछ सहायक संरचनाएं आवश्यक होती है. सहायक संरचना पूंजीगत ढांचे का वह रूप है जो अर्थव्यवस्था में सेवाएं प्रदान करता है जिस प्रकार भौतिक वस्तुओं के उत्पादन के लिए हर व्यक्ति मशीन एवं उपकरण आदि जैसे पूंजीगत ध्यान दें की आवश्यकता होती है उसी प्रकार यातायात, सिंचाई, शिक्षा, तथा स्वास्थ्य सेवाओं आदि की व्यवस्था के लिए भी रेलवे, वस्तुएं बस स्कूल विद्यालय अस्पताल आदि के रूप में एक पूंजी ढांचे की जरूरत पड़ती है इसे सेवाएं प्रदान करने वाली पूंजी ढांचा (capital structure for services) कहते हैं. इस ढांचे के बिना कोई अर्थव्यवस्था कार्यशील नहीं हो सकती. इस संरचना या ढांचे पर ही किसी अर्थव्यवस्था का विकास निर्भर है!

एक अर्थव्यवस्था की सहायक अथवा आधार संरचना दो प्रकार की होती है सामाजिक एवं आर्थिक सामाजिक संरचना है हमारी आर्थिक प्रक्रिया को बाहर से अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करती है. इससे मनुष्य एवं इसके कार्य करने की दशाओं में सुधार होता है और उसकी कार्यक्षमता बढ़ती है शिक्षा प्रशिक्षण एवं शोध स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण आवास तथा अन्य नागरिक सुविधाएं सामाजिक संरचना के मुख्य अंग हैं.

* भारतीय अर्थव्यवस्था की मूल विशेषताएं (Basic features of indian Economy):- अर्ध- विकसित राष्ट्र के रूप में भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रमुख

विशेषताएं निम्नलिखित हैं-

- 1) कृषि की प्रधानता
- 2). निर्धनता तथा प्रति व्यक्ति निम्न आय
- 3). पूंजी निर्माण
- 4). पूंजी उत्पाद अनुपात
- 5). अपर्याप्त आधारीक संरचना
- 6). बेरोजगारी और अर्ध बेरोजगारी 7). जनसंख्या में तीव्र वृद्धि
- 8). प्राकृतिक साधनों की प्रचुरता 9). ग्रामीण अर्थव्यवस्था
- 10). आर्थिक असमानता
- 11). सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं से प्रभावित आर्थिक असमानता
- 12). मानसून पर निर्भरता संपन्नता में दरिद्रता.

नवीन विशेषताएं:- 1). नियोजित मिश्रित अर्थव्यवस्था 2). प्रति व्यक्ति आय एवं राष्ट्रीय आय में वृद्धि 3). बचत व विनियोग दरों में वृद्धि 4). तीनों क्षेत्रों का सापेक्षिक महत्व 5). कृषि क्षेत्र का विकास 6). औद्योगिक विकास 7). सार्वजनिक क्षेत्र का विकास 8). निर्धनता दूर करने के विशिष्ट कार्यक्रम 9). यातायात एवं संचार 10). सामाजिक परिवर्तन.

निष्कर्ष (Conclusion) उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि योजना काल में भारत ने तीव्र गति से आर्थिक विकास किया है जिसके कारण यहां की अर्थव्यवस्था में संसंस्थात्मक एवं संरचनात्मक परिवर्तन स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रहे हैं। आज हमारा औद्योगिक ढांचा पहले से अधिक मजबूत है. कृषि क्षेत्र में विविध संस्थागत और तकनीकी सुधार हुए हैं वित्तीय ढांचा अधिक सशक्त और फैला हुआ है. आर्थिक उदारीकरण की नीति के तहत निजी क्षेत्र को बढ़ावा दिया जा रहा है. बाजार संयंत्र का अधिक उपयोग किया जा रहा है तथा देश की अर्थव्यवस्था को विश्व की अर्थव्यवस्था से जोड़ने का प्रयास चल रहा है। हर्ष की बात है कि भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था हो गई है।